भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान दिल्ली
पाक्षिक समाचार

सम्पर्क

आज़ादी का अमृत महोत्सव

खण्ड–XXVII अंक–14 31 जुलाई, 2022

सुकृति संभु तन बिमल बिभूती। मंजुल मंगल मोद प्रसूती।।
जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किएँ तिलक गुन गन बस करनी।।

वह रज सुकृति (पुण्यवान पुरुष)–रूपी शिवजी के शरीर पर सुशोभित निर्मल विभूति है और सुन्दर कल्याण और आनन्द की जननी है, भक्त के मन रूपी सुन्दर दर्पण के मैल को दूर करने वाली और तिलक करने से गुणों के समूह को वश में करने वाली है।

श्रीरामचरितमानस (बालकाण्ड)/2

उप निदेशक (प्रचालन)

कुलसचिव सचिवालय से प्राप्त कार्यालय ज्ञापन सं. IITD/RS-AREG/2022/ 59436 दिनांक 21.7.2022 के अनुसार चयन समिति की सिफारिशों के आधार पर अध्यक्ष, अभिशासक परिषद ने प्रो. टी.आर. श्रीकृष्णन (जैव रासायनिक इंजीनियरी एवं जैव प्रौद्योगिकी) को दिनांक 25 जुलाई, 2022 से आगामी दो वर्ष की अवधि के लिए संविदा आधार पर उप निदेशक (प्रचालन) के पद पर नियुक्त किया है। उपरोक्त अवधि के दौरान प्रो. टी.आर. श्रीकृष्णन अपने विभाग (जैव रासायनिक इंजीनियरी एवं जैव प्रौद्योगिकी) में प्रोफेसर पद पर पुनर्ग्रहणाधिकार रखेंगे।

स्वागत

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/58485 दिनांक 19.7.2022 के अनुसार **प्रो. रथिन बिस्वास** ने 11.7.2022 से संस्थान के पब्लिक पॉलिसी स्कूल में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. रथिन बिस्वास को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/58479 दिनांक 19.7.2022 के अनुसार **प्रो. (सुश्री) मधुलिका सोनकर** ने 11.7.2022 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–11 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–II के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. (सुश्री) मधुलिका सोनकर को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/57041 दिनांक 13.7.2022 के अनुसार **प्रो. ईशान आनन्द** ने 8.7.2022 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. ईशान आनन्द को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/60564 दिनांक 25.7.2022 के अनुसार **प्रो. डॉन वालेस फ्रीमेन डीक्रूज** ने 20.7.2022 से संस्थान के मानविकी एवं समाज विज्ञान विभाग में सातवें वेतन आयोग के लेवल–12 में सहायक प्रोफेसर ग्रेड–I के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

  प्रो. डॉन वालेस फ्रीमेन डीक्रूज को उनकी नियुक्ति से तीन वर्ष की अवधि अथवा वेतन लेवल 13ए1 प्राप्त करने तक (जो भी पहले हो) के लिए संस्थान द्वारा प्रायोजित ''युवा संकाय प्रोत्साहन फेलोशिप'' भी प्रदान की गई है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/59186 दिनांक 20.7.2022 के अनुसार **डॉ. राजेश कुमार झा** ने 18.7.2022 से संस्थान के पदार्थ विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/59026 दिनांक 20.7.2022 के अनुसार **डॉ. कृषाणु गांगुली** ने 20.7.2022 से संस्थान के यांत्रिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/56066 दिनांक 11.7.2022 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) अरित्रा दास** ने 11.7.2022 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/2022/53682 दिनांक 11.7.2022 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) वर्निता वर्मा** ने 1.7.2022 से संस्थान के अन्तरविद्याशाखायी अनुसंधान स्कूल (SIRe) में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-5/2022/56589 दिनांक 12.7.2022 के अनुसार **डॉ. इन्द्रानिल सरकार** ने 8.7.2022 से संस्थान के अनुप्रयुक्त यांत्रिकी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/58013 दिनांक 22.7.2022 के अनुसार **डॉ. अर्शन खान** ने 18.7.2022 से संस्थान के रासायनिक इंजीनियरी विभाग में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

- स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/U-3/2022/60751 दिनांक 26.7.2022 के अनुसार **डॉ. (सुश्री) महरूश** ने 18.7.2022 से संस्थान के भारती दूरसंचार एवं प्रबन्ध स्कूल में पोस्ट–डॉक्टरल फेलो के रूप में कार्यभार ग्रहण किया है।

सेवानिवृत्तियाँ

संस्थान के निम्नलिखित स्टाफ सदस्य अधिवर्षिता की आयु होने पर 31 जुलाई, 2022 को अपराह्न में संस्थान से सेवानिवृत्त हो रहे हैं :–

श्री अशोक कुमार कठेरिया (26300), वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक, केन्द्रीय पुस्तकालय

श्री अशोक कुमार कठेरिया ने 11 नवम्बर, 1991 को संस्थान में अटेन्डेन्ट के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 5 अगस्त, 1993 में आपको प्रोफेशनल सहायक के रूप में नियुक्त किया गया। 20 अप्रैल, 1998 में आपको तकनीकी सहायक (पुस्तकालय) के रूप में पुनर्पदनामित तथा 1 मई, 1998 में वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक के रूप में मैप किया गया। 1 सितम्बर, 2008 तथा 20 अप्रैल, 2018 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। सौम्य स्वभाव के श्री अशोक कुमार कठेरिया कर्मठ, योग्य एवं कर्तव्यपरायण वरिष्ठ पुस्तकालय सूचना सहायक रहे हैं।

श्रीमती अनीता मोहन दास (26114), स्टाफ नर्स, भा.प्रौ.सं. अस्पताल

श्रीमती अनीता मोहन दास ने 12 दिसम्बर, 1993 को नर्स के रूप में संस्थान के अस्पताल में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 मई, 1998 को आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत स्टाफ नर्स के रूप में मैप किया गया तथा 1 जनवरी, 2006 को इसी योजना के अन्तर्गत आपको स्टाफ नर्स ग्रेड–I के रूप में पदोन्नत/उन्नयन दिया गया। 21 दिसम्बर, 2013 को एम.ए.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको उन्नयन दिया गया। सेवा भाव से परिपूर्ण श्रीमती अनीता मोहन दास एक योग्य एवं मेहनती नर्स रही हैं।

श्री बीर सिंह (50241), माली, निर्माण संगठन (बागवानी)

श्री बीर सिंह ने 7 फरवरी, 1983 को संस्थान में माली के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। आपको वेतनमान 750–940/–रु. में नियुक्त किया गया। 1 मार्च, 1991 को आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको उच्चतर वेतनमान 950–1400/–रु. के लिए चयनित किया गया। 1 मार्च, 2003 में आर.सी.पी.एस. के अन्तर्गत आपको 4000–6000/–रु. के वेतनमान में उन्नयन दिया गया। 1 मार्च, 2011 में एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको 2800/–रु. के वेतनमान में उन्नयन दिया गया। श्री बीर सिंह एक मेहनती एवं कर्तव्यपरायण माली रहे हैं।

श्री कुन्दन सिंह (70012), हेल्पर, केयरटेकर एकक

श्री कुन्दन सिंह ने 15 जनवरी, 1987 को संस्थान में हेल्पर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। आपको वेतनमान 750–940/–रु. में नियुक्त किया गया। 1 फरवरी, 1992 को आर. ऐन्ड सी.डी.एस. के अन्तर्गत आपको वेतनमान 800–1150/2650/–रु. में पदोन्नत किया गया। 1 सितम्बर, 2004 को एम.ए.सी.पी. के अन्तर्गत आपको वेतनमान 3050–4590/–रु. में उन्नयन दिया गया तथा 1 सितम्बर, 2014 में आपको इसी योजना के अन्तर्गत उन्नयन दिया गया। सौम्य स्वभाव के श्री कुन्दन सिंह एक योग्य एवं मेहनती हेल्पर रहे हैं।

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति

प्रो. संदीप सेन, कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग

स्थापना अनुभाग–I से प्राप्त विज्ञप्ति सं. IITD/IESI/2022/37414 दिनांक 25.5.2022 के अनुसार **प्रो. संदीप सेन** (कम्प्यूटर विज्ञान एवं इंजीनियरी विभाग) ने संस्थान से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति के लिए अनुरोध किया था, जिसे सक्षम प्राधिकारी ने 1.8.2022 से स्वीकार कर लिया है।

प्रो. संदीप सेन ने 3 जून, 1991 को संस्थान में सहायक प्रोफेसर के रूप में कार्यभार ग्रहण किया था। 1 अगस्त, 1997 में आपको सह प्रोफेसर तथा 13 जनवरी, 2000 में प्रोफेसर के रूप में पदोन्नत किया गया। आपने 1985 में आई.आई.टी. खड़गपुर से बी.टेक. की उपाधि प्राप्त की।

1986 में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय से एम.एस. तथा 1989 में ड्यूक विश्वविद्यालय से पीएच.डी. की उपाधि प्राप्त की। प्रो. संदीप सेन अपने संकाय साथियों, छात्रों तथा स्टाफ सदस्यों के बीच अत्यन्त लोकप्रिय संकाय रहे हैं।

संस्थान समुदाय उपरोक्त स्टाफ सदस्यों को भावभीनी विदाई देते हुए उनके एवं उनके परिवार के लिए सुख, समृद्धि एवं शांतिमय जीवन की कामना करता है।

श्री हरि सत्संग सभा आई.आई.टी. दिल्ली

श्री हरि सत्संग सभा के सचिव से प्राप्त जानकारी के अनुसार प्रो. अनिल कुमार सरोहा जी की अध्यक्षता में दिनांक 17.7.2022 को हुई आम सभा की बैठक में निम्नलिखित कार्यकारिणी के सदस्यों का सर्वसम्मति से चयन किया गयाः–

श्री वीरभान	प्रधान
श्री सुरेश शर्मा	उप प्रधान
श्री विशेष कुमार	सचिव
श्री मनीष कुमार	सह सचिव
श्री करन सिंह	कोषाध्यक्ष
श्री अमित कुमार	लेखा परीक्षक

कार्यकारिणी के अन्य सदस्य

श्री मनोरंजन कुंडू
श्री डालचंद शर्मा
श्री ललित कपूर
श्री संजय कुमार गुप्ता
श्री जे.पी. सिंह
श्री राजेश तोमर
श्री संजीव दलपत
श्री विनोद कुमार (IDDC)

कीर्तन संचालकः श्री कृपा शंकर त्रिपाठी, श्री संजय कुमार गुप्ता, श्री मनीष कुमार

सहयोजित सदस्यः

श्री योगेश कुमार (कनिष्ठ इंजीनियर), श्री नीमलाल, श्री गजराज सिंह, श्री पी. के. सिंघल, श्री ए.के. सिंह, श्री अनिल (निर्माण अनुभाग), श्री जितेंद्र प्रसाद, श्री गोविंद प्रसाद, श्री कृष्ण कुमार, श्री नितिन चौरसिया, श्री श्रीपाल सिंह, श्री पुनीत नागपाल, श्री सुजीथ, श्री अर्जुन शाह, श्री विनोद (केयरटेकर), श्री ओमबीर, श्री राजीव दहिया, श्री कपिल कुमार, श्री अजय ढ़ाका, श्री हिमांशु।

विशेष आमंत्रित सदस्यः श्री वी.के. नाहर, श्री आतम प्रकाश ठुकराल, श्री डी. सी. शर्मा, श्री यशपाल शर्मा, श्री गयादीन सिंह यादव, श्री निर्मल कुमार, श्री विजय भारज, श्री राम सिंह राठौर।

मूल्यों का महत्व

नैतिक मूल्य मानव को परिपूर्णता प्रदान कर उसे ईश्वरीय रचनाओं में श्रेष्ठ बनाते हैं, परंतु आधुनिकता के नाम पर इन मूल्यों का निरंतर अवमूल्यन होता जा रहा है। बढ़ता भौतिकतावाद उन्हें लील रहा है। परिणामस्वरूप नैतिकता घुट–घुटकर ही सांस ले पा रही है। यह स्थिति तब है जब नैतिकता को मानव समाज के अभिन्न अंग के रूप में मान्यता मिली है। नैतिकता के अभाव में मनुष्यता का आकलन संभव ही नहीं। नैतिकता व्यक्ति के विकास में एक सीढ़ी के समान है, जिसके सहारे हम अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं। नैतिक मूल्यों के अभाव में मनुष्य मानव जीवन को निरर्थक बना देता है। प्रख्यात विचारक अल्बेयर कामू ने भी कहा है कि नैतिकता के बिना एक व्यक्ति इस दुनिया में किसी पशु के समान है।

हम जीवन में महत्वपूर्ण निर्णय नैतिक कसौटी पर कसने के बाद ही करते हैं, लेकिन देखने में आता है कि कई बार मनुष्य उसे अनदेखा कर फैसला करता है, जो नैतिक पतन का कारण बनता है। स्मरण रहे कि ईश्वर ने हमें सिर्फ सुख भोगने के लिए ही इस संसार में नहीं भेजा है इसीलिए केवल भौतिक सुखों के लिए नैतिकता का परित्याग करना उचित नहीं। इसका एक कारण यही है कि अब हमने अपने अंतःकरण की आवाज को अनसुना करना आरंभ कर दिया है। हमें यह पता होता है कि अमुक कार्य नैतिक रूप से सही नहीं, लेकिन सुख के लिए वह कार्य करने से संकोच नहीं करते। इसमें अक्सर दूसरे के हितों की बलि चढ़ जाती है। स्वाभाविक है कि इससे टकराव बढ़ेगा। यही टकराव कई बार प्राणघातक तक हो जाता है। व्यक्तिगत, सामुदायिक, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर यही नैतिकता का पतन अशांति एवं दुखों का कारण बनता है। यदि हमें अपना, समाज का, राष्ट्र का और समस्त विश्व का जीवन बेहतर बनाना है तो सभी स्तरों पर नैतिकता का पालन करना होगा। ये मूल्य इतने सशक्त होते हैं कि यदि उनका शुद्ध अंतःकरण से अनुपालन किया जाए तो वे शांति और समृद्धि का माध्यम बनते हैं।

लेखक–नृपेन्द्र अभिषेक नृप

कविता

खोया था जो फिर मिला है

सब बंद पड़ा है, ये दौर बुरा है,
मानव बेहाल खड़ा है, ये दौर बुरा है।
पर, इस बुरे में कुछ अच्छा भी छिपा है,
जो सालों में ना हो पाया, कुछ दिनों में वो हो गया है।
फिर लौट आई है गंगा की निर्मलता,
आसमान से कोहरा फिर है छटा।
गगन में पंछी बेखौफ है उड रहा,
हवा में काला धुआँ नहीं दिखता।
अब रात में आसमान चमकता है,
चांद भी बिल्कुल साफ दिखता है,
फिर सितारों में परदादा नजर आते हैं,
वो सप्त–ऋषि सब फिर से देख पाते हैं।
हवा में एक मिठास है,
ताजगी का नया एहसास है।

प्रकृति में नया उल्लास फूटा है,
हर कण नवीन सजृन में जुटा है।
हाँ, सब बंद पड़ा है, मानव बेहाल खड़ा है।
पर इस बंद में कुछ नया शुरू हुआ है।
शुरू हुआ है प्रकृति का नव–निर्माण,
फिर लौटे हैं यमुना में प्राण,
फिर से चिडियां चहकी हैं,
फिर से पृथ्वी महकी है।

आशा है मेरी, कि जल्द वह वक्त आए,
जब फिर से हम बाहर निकल पाएं,
पर, फिर से हम अपनी भूल ना दोहराएँ।
पास की दूरी के लिए पैदल ही जाएं,
पानी थोड़ा कम बहाएँ,
थोडी बिजली ज्यादा बचाएँ
सरकारी वाहन अपनाएँ,
प्लास्टिक उपयोग में न लाएँ।
मुश्किल से सब ठीक हुआ है, खोया था जो फिर मिला है।
बरसों से जो ना हो पाया, इस बंद में वह हो गया है।

–ऋचा सिंह
रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय

आजादी का अमृत महोत्सव

जन्मसिद्ध अधिकार है 'स्वराज'

''अग्निधर्मा लेखन की वजह से 1908 में जेल गए लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक 1914 में लौटे। राजनीति पर नरम दल के बढ़ते वर्चस्व और दम तोड़ते स्वदेशी आंदोलन को देखकर परेशान तिलक ने राष्ट्रवादी आंदोलनों की चिंगारी फिर से जलाने के लिए एनी बेसेंट के साथ मिलकर होमरूल लीग की स्थापना की। इस अभियान को सालभर के अंदर ही पूरे देश में पुरजोर समर्थन मिला। होमरूल मूवमेंट ने राष्ट्रवाद को नई दिशा दी और लोकमान्य तिलक नायक बनकर उभरे। उनकी जन्मजयंती (23 जुलाई) पर पढ़िए वह क्रांतिकारी भाषण, जिसमें उन्होंने अपना विश्व प्रसिद्ध नारा दिया..... ।''

मेरी उम्र बहुत जवां नहीं है, लेकिन मेरे जज्बे में आज भी वही आग है। आज मैं आपसे जो कुछ भी कहूंगा वो आपके लिए हमेशा प्रेरणादायक होगा। ये शरीर भले ही ढ़ल जाए, बूढ़ा हो जाए, जर्जर हो जाए, लेकिन हमारी प्रतिज्ञा अमर होती है। ठीक उसी तरह, हो सकता है हमारे स्वराज अभियान में थोड़ी शिथिलता आ जाए, लेकिन इसके पीछे की सोच और उद्देश्य शाश्वत है, जो कभी खत्म नहीं होंगे और हम स्वतंत्रता हासिल करके रहेंगे।

स्वराज हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। मेरा स्वराज जब तक मेरे अंदर जिंदा है, मैं कमजोर या बूढ़ा नहीं हो सकता। कोई भी हथियार इस हौसले को पस्त नहीं कर सकता, कोई आग इसे जला नहीं सकती, पानी की धारा इसे भिगो नहीं सकती, हवा के तेज झोंके भी इसे सुखा नहीं सकते। हम स्वराज की मांग करते हैं और हम इसे लेकर ही रहेंगे।

जो विज्ञान स्वराज पर खत्म होती है, वही राजनीति की भी विज्ञान होनी चाहिए, वो नहीं जो गुलामी की ओर ले जाए। राजनीति का विज्ञान ही देश का वेद है। मैं आपकी अंतरआत्मा को जगाने आया हूं। मैं आप सबको झूठे, मक्कारों और ठगों के झांसे से बाहर निकालने आया हूं। स्वराज का मतलब कौन नहीं जानता? स्वराज कौन नहीं चाहता?

अगर मैं आपके घर जबरन घुस आऊं और आपके किचन को कब्जे में ले लूं तो क्या आप इसकी इजाजत देंगे? नहीं न, मेरे घर के तमाम मसलों पर मेरा अधिकार होना चाहिए। एक सदी गुजर गई, लेकिन अंग्रेजी हुकूमत अब भी हमें स्वराज के काबिल नहीं मानती, लेकिन अब हम अपनी लड़ाई खुद लड़ेंगे।

जब इंग्लैंड भारत का इस्तेमाल कर बेल्जियम जैसे छोटे राष्ट्र को बचाना चाहता है फिर वो हमें किस मुंह से स्वराज के काबिल नहीं मानता? जो लोग हमें गलत ठहरा रहे हैं, वो लालची और हमारे विरोधी हैं, लेकिन इससे विचलित होने की जरूरत नहीं है, क्योंकि बहुत से लोग ईश्वर के निर्णय में भी खोट निकालते हैं।

हमें इस वक्त बिना कुछ और सोचते हुए देश की आत्मा की रक्षा में जुटना होगा। हमारे देश का भविष्य और समृद्धि अपने जन्मसिद्ध अधिकार यानी स्वराज में निहित है।

आपको बता दूं कि कांग्रेस ने स्वराज का प्रस्ताव पास कर दिया है। वैसे देखा जाए तो हमारे स्वराज अभियान के रास्ते में अब भी कई अड़चनें खड़ी हैं या खड़ी की जा रही हैं। बड़े स्तर पर अशिक्षा ऐसी ही एक बड़ी अड़चन है, लेकिन हम इस अड़चन को बहुत दिनों तक नहीं सह सकते। अगर हमारे देश के अशिक्षित लोगों को स्वराज की थोड़ी जानकारी भी हो, तब भी बहुत बड़ा मसला हल हो सकता है, ठीक वैसे ही जैसे ईश्वर का पूरा सत्य शायद ही इसमें से कोई जानता है फिर भी उसमें अटूट आस्था रखता है।

मेरा मानना है कि जो अपना काम खुद कर सकते हैं वो अशिक्षित जरूर हो सकते हैं, लेकिन मूर्ख नहीं। वो किसी भी पढ़े–लिखे इंसान जैसे ही विद्वान है और अगर वो अपनी जरूरतों और परेशानियों का फर्क समझ लें तो उन्हें स्वराज के मूल्यों को समझने में भी कोई दिक्कत नहीं होगी।

हमें समझना होगा कि अनपढ़ लोग भी इसी समाज का हिस्सा हैं और हममें से ही हैं। उनको भी समाज में समान अधिकार है। इसलिए जनमानस को जागृत करना हमारा कर्तव्य है। परिस्थितियां बदली हैं और हमारे लिए ये बिल्कुल सही मौका है। इस वक्त हम सबकी एक ही आवाज है–'अभी नहीं तो कभी नहीं'।

आइए हम सब इंसाफ और संवैधानिक क्रांति की राह पर चलें। संकल्प करिए और पीछे मुड़कर मत देखिए। अंत परिणाम ऊपर वाले के हाथों पर छोड़ दीजिए।

साभार–दैनिक जागरण
दिनांक–17 जुलाई, 2022

राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) के अंतर्गत अनिवार्य रुप से द्विभाषी जारी किए जाने वाले कागजात

1 सामान्य आदेश/General Orders
2 संकल्प/Resolution
3 परिपत्र/Circulars
4 नियम/Rules
5 प्रशासनिक या अन्य प्रतिवेदन/ Administrative or other reports
6 प्रेस विज्ञप्तियाँ/Press Release/ Communiques
7 संविदाएँ/Contracts
8 करार/Agreements
9 अनुज्ञप्तियाँ/Licences
10 निविदा प्रारुप/Tender Forms
11 अनुज्ञा पत्र/Permits
12 निविदा सूचनाएँ/Tender Notices
13 अधिसूचनाएँ/Notifications
14 संसद के समक्ष रखे जाने वाले प्रतिवेदन तथा कागज पत्र/ Reports and documents to be laid before the Parliament

हिन्दी कक्ष द्वारा सम्पादित एवं प्रकाशित दूरभाषः EPABX 7144

मुद्रकः सागर प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली। ई–मेलः sagarprinters@gmail.com